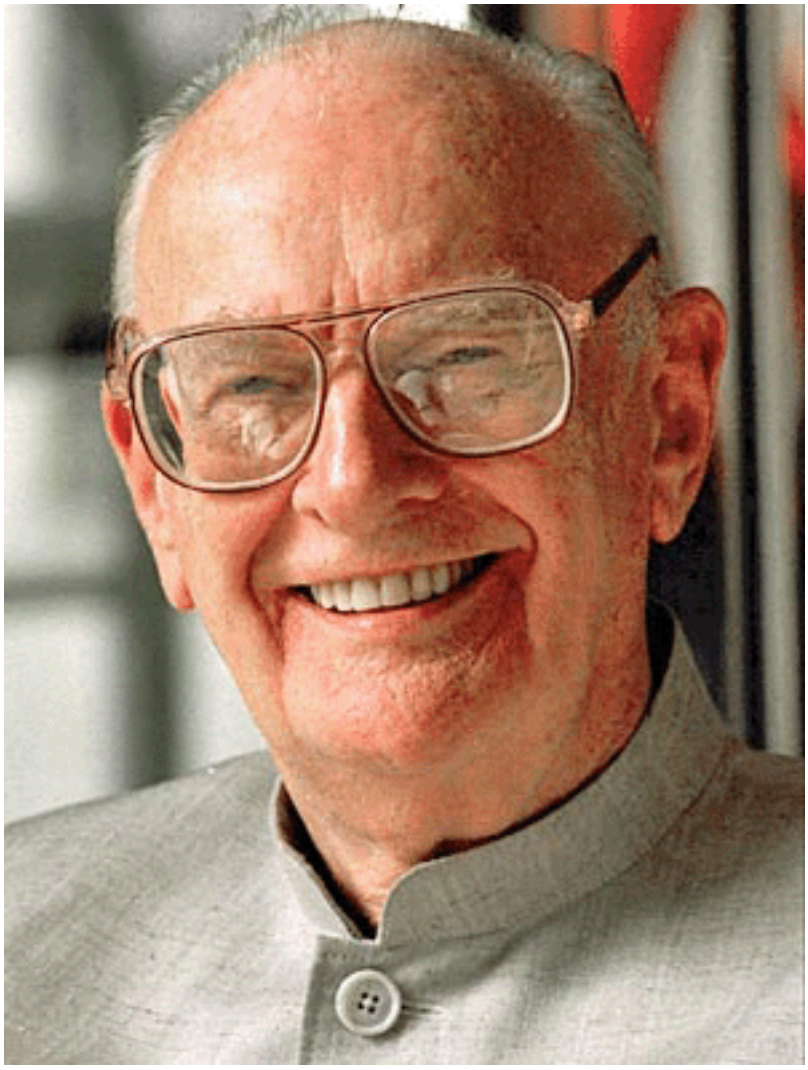

सर आर्थर सी. क्लार्क

(16 दिसंबर 1917-19 मार्च 2008)

अंतरिक्ष यात्रा की कल्पना करने वाले और उसे वैज्ञानिकों के समक्ष एक चुनौती के रूप में पेश करने वाले सर आर्थर सी. क्लार्क का निधन गत 19 मार्च को हो गया। वे 90 वर्ष के थे और पिछले 50 वर्षों से श्रीलंका में रह रहे थे। कई विज्ञान कथाओं व वैज्ञानिक पुस्तकों के लेखक सर क्लार्क ने न सिर्फ अंतरिक्ष यात्रा का विचार पेश किया था बल्कि काफी सटीक गणनाओं के आधार पर यह भी स्पष्ट किया था कि यदि कोई उपग्रह पृथ्वी से 36,000 किलोमीटर की ऊंचाई पर चक्कर काटेगा, तो पृथ्वी से देखने पर वह स्थिर नज़र आएगा। यह 1945 की बात है। इस तरह के उपग्रह का उपयोग संचार उपकरण के रूप में करने का विचार भी सर क्लार्क ने ही प्रस्तुत किया था। आज इस कक्षा में सैकड़ों उपग्रह चक्कर काट रहे हैं। क्लार्क संचार को सहयोग व साझेदारी का एक प्रमुख साधन मानते थे। अन्य ग्रहों पर बस्तियां बनने की कल्पना भी उन्हीं की थी।

सर क्लार्क की खूबी यह थी कि विज्ञान की गहरी सूझबूझ के साथ वे अपनी कल्पना शक्ति का भरपूर उपयोग करते थे। उनका मानना था कि कोई भी अक्लमंद जीव देर सबेर अंतरिक्ष पर विजय पाकर रहेगा। उनको यकीन था कि अपनी ऊर्जा अंतरिक्ष के अन्वेषण में लगाने से धरती के युद्धों को टाला जा सकेगा।

अपने जीवन काल में क्लार्क ने 137 पुस्तकें लिखीं जिनमें कथा व गैर-कथा दोनों तरह का साहित्य शामिल है। उन्होंने एक फिल्म के निर्माण में भी योगदान दिया था - 2001: ए स्पेस ओडेसी। यह अपने समय में बहुत चर्चित रही थी।